११. अद्‌भुत वीर

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) संजाल पूर्ण कीजिए:

कर्ण के नाम

उत्तर: १) वासुसेन
२) वैकर्तन
३) अंगराज
४) राधेय

(ग) आकृति पूर्ण कीजिए:

उत्तर:
श्रेष्ठ ज्ञानी - जो ऊँच-नीच का भेद न माने।
पूज्य प्राणी- जिसमें दया धर्म हो ।
क्षत्रिय वही - जिसमें तप त्याग हो ।
श्रेष्ठ ब्राह्मण वही - जिसमें तप-त्याग हो ।

(ख) प्रवाह तख्ता पूर्ण कीजिए :
- कर्ण की विशेषताएँ

उत्तर:

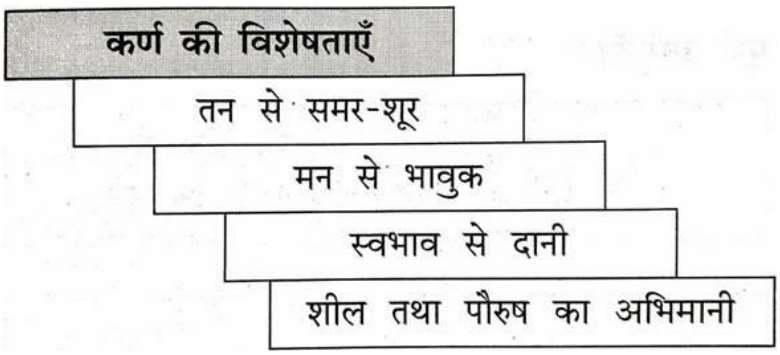

(घ) साम्य-भेद लिखिए :
कर्ण-अर्जुन
साम्य

(१) दोनों समरशूर
(२) दोनों श्रेष्ठ धनुर्धर

भेद
(१) सूतपुत्र, युद्धकौशल स्वयं सीखा।
(२) राजपुत्र, युद्धकौशल द्रोणाचार्य से सीखा।

(च) भिन्नार्थक शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।
(१) जलद - बादल

वाक्य : वर्षाऋतु में आकाश में जलद छाए रहते हैं।
जलद - कपूर
वाक्य : देवताओं की आरती में जलद का उपयोग किया जता है।

(२) फूल - पुष्प ।

वाक्य : पूजा करते समय पुजारी देवताओं के चरणों में फूल चढ़ाते है।
फूल - प्रसन्न होना
वाक्य : यश प्राप्त होने पर भी हमें गर्व से नहीं फूलना चाहिए।

(३) कर्ण - कान

वाक्य : पाँच इंद्रियों में कर्ण एक महत्त्वपूर्ण इंद्रिय है।
कर्ण - कुंतीपुत्र
वाक्य : कुंतीपुत्र होते हुए भी कर्ण को बहुत सामाजिक अपमान झेलना पड़ा।

(छ) तुकांत शब्द लिखिए ।

उत्तर: (१) अनल को --- बल को
(२) आग --- त्याग
(३) बतला के --- दिखला के
(४) क्षीर --- वीर
(५) फूल --- धूल

(२) "चखा भी नहीं जननि का क्षीर" काव्य पंक्ति से कर्ण की विवशता स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर: पौराणिक आख्यानों के अनुसार यद्यपि कर्ण सूर्य और कुंती का पुत्र था। चूँकि कर्ण का जन्म कुंती के विवाह के पूर्व हुआ था, इसलिए लोकलाज के भय से कुंती ने कर्ण को एक झाँपी में रखकर नदी में बहा दिया। वह झाँपी राधा नाम की एक महिला को मिली। उसी ने कर्ण का पालन-पोषण किया।

कर्ण को जन्म से लेकरं मृत्युतक उसें जन्म देने वाले माता का प्रेम नही मिला जीसका वह सही मायनोमे

हकदार था। जब उसें अपने माता के बरे मे पाता चला तब ताक एक ऐसा माहोल बन चुकाथा की वह दुनिया को अपने माता के बता भी नही सकता था; क्यो की उसे अपना मित्रता धर्म का भी पालन करना था। इस प्रकार कर्ण को जितेजी वह सम्मान नाही मिला जिस्का वह हकदार था।

(३) कविता में प्रयुक्त विरामचिह्नों के नाम लिखकर उनका अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

उत्तर:
(१) ('.....') इकहरा उद्धरण चिह्न
(२) (,) अल्पविराम
(३) (-) विभाजक चिह्न
(४) (1) पूर्णविराम
(५) (?) प्रश्नवाचक चि
(६) ("....") उद्धरण चिह्न
(७) (!) विस्मयादिबोधक चिह्न

लेखनीय
'मैं लाल किला बोल रहा हूँ...' निबंध लिखिए ।

उत्तर : भारत का हृदय दिल्ली है और दिल्ली का अंतः करण मैं लाल किला हूँ। मैंने लगभग चार शताब्दियों के उतार-चढ़ाव देखे हैं। मुगल साम्राज्य का उत्थान-पतन, उसके बाद इस महान देश को कुचलता हुआ कालचक्र तथा उसकी विनाश-लीला मेरे हृदय पटल पर अंकित है।

भारतीय स्वाभिमान को कुचलने वाला यूनियन जैक कई सालों तक मुझ पर फहराता रहा। ब्रिटिश सत्ता को सुरक्षित रखने वाले भंडार भी यहीं थे। किंतु देश के सपूतों ने सन् १८५७ की क्रांति का आयोजन कर सारे संसार को चौंका दिया। उस समय झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई और वीर तात्या टोपे आदि के द्वारा सुलगाई हुई क्रांति की ज्वाला धधक उठी थी।

मैं 'लाल किला' अपने अंतस्तल में इतिहास सँजोए हुए हूँ। मैं मुगल बादशाहों के दबदबे का साक्षी हूँ। मेरे ही प्रांगण में उनके राज्याभिषेक हुए, जहाँ विदेशी राजदूत कोर्निश करते, सलामी देते और नज़राने पेश करते थे। मैंने अनेक राजकीय षड्यंत्र और जय-पराजय के दृश्य देखे हैं।

आजाद हिंद फौज के महान देशभक्तों पर अंग्रेजों ने मेरे ही प्रांगण में मुकदमा चलाकर फाँसी की सजा देनी चाही, किंतु नेहरू के कारण वे अपने प्रयत्न में सफल न हो सके। जब मैंने अंतरराष्ट्रीय कानून के गहन अध्येता और विश्व के इतिहास में गहरी पैठ रखने वाले जवाहरलाल नेहरू को बैरिस्टर के गाउन में अपने प्रांगण में देखा तो मैं नेहरू तथा अन्य जननायकों की जयजयकार कर उठा। मेरे प्रिय सुभाष और उनके सहायक इतिहास के जाज्वल्यमान नक्षत्र बन गए। आज भी मुझे वे क्षण याद हैं, जब हमारे प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने स्वतंत्र भारत का तिरंगा ध्वज पहली बार मुझ पर फहराया था। फिर तो हर वर्ष १५ अगस्त को मुझ पर तिरंगा ध्वज फहराया जाता है।